IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन

खडानन जी भावेश, शोधार्थी

डॉ0 गौरव सिंह, सह आचार्य

कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर

शोध सारांश

वास्तव में सृजनात्मक शिक्षा समाज, राष्ट्र और व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। इस प्रतिस्पर्धात्मक वैज्ञानिक एवं औद्योगिक युग में बढ़ती चुनौतियों का सामना करने तथा आधुनिकतम वैज्ञानिक तथा तकनीकी आविष्कारों का लाभ उठाने तथा रचनात्मकता के विकास में शिक्षा अनिवार्य हो जाती है। वास्तव में शिक्षा का विकास सृजनात्मकता, मानवीय मूल्य की पूर्णता के लिए हुआ है। शिक्षा व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकसित होने का पर्याप्त अवसर प्रदान करती है। सृजनात्मक शिक्षा व्यक्ति में वह योग्यता उत्पन्न करती है कि जिससे वह प्रयोग व निरीक्षण के आधार पर ज्ञान प्राप्त करके जीवन के प्रत्येक पक्ष का भली–भाँति संयोजन कर सके। सृजनात्मक शिक्षा से जहाँ व्यक्ति का संतुलित विकास होता है वहीं व्यक्ति की योग्यताओं एवं क्षमताओं का शाश्वत दिग्दर्शन भी होता है। वस्तुतः शिक्षा एक सतत गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें साध्य के साथ साधन भी महत्वपूर्ण होते हैं। यह प्रत्येक सुव्यवस्थित शिक्षा प्रणाली का यह कार्य होना चाहिए कि वह अनाधिकारिक रूप से बालकों की मानसिक अविवृद्धि को प्रभावित न करे ताकि उनमें सृजनात्मकता का विकास हो सके, जिसके द्वारा सामाजिक, सास्कृतिक एवं भौतिक प्रगति को आगे बढ़ाया जा सके। इसके साथ ही शिक्षा के द्वारा बालक की शारीरिक व मानसिक शक्तियों का विकास किया जाता है ताकि उनमें वाह्य जगत से सामंजस्य स्थापित करने की शक्ति उत्पन्न हो सके, साथ ही साथ उनके जीवन में रचनात्मकता का विकास हो और वह पूर्ण ज्ञाता बनकर अपनी शक्ति के अनुसार उनमें भाग लेने के लिए तत्पर हो जाय, यही सृजनात्मकता का वास्तविक कार्य है।

बीज शब्द– उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, यू0पी0 बोर्ड एवं सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, सृजनात्मकता, सृजनशीलता, रचनात्मकता।

प्रस्तावना–

शिक्षा के द्वारा मनुष्य की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक एवं जन्मजात शक्तियों का विकास करके उनमें ज्ञान एवं कला के द्वारा सृजनात्मकता में वृद्धि की जाती है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित करके उसे सभ्य सुयोग्य बनाकर समाज का उपयोगी नागरिक बनाया जाता है। सृजनात्मकता को कुछ समय पूर्व तक वैज्ञानिको, साहित्यकारों, कलाकारों को बुद्धिजीवियों की निधि एवं बुद्धि का अंग मन जाता था, किन्तु विभिन्न प्रयोगों के आधार पर यह अवधारणा त्रुटिपूर्ण सिद्ध हो

गयी है। इसलिए सृजनात्मक विकास, विकासशील देश की अमूल्य निधि एवं सामाजिक–आर्थिक तथा व्यक्तिगत उन्नति का अमोध अस्त्र है।

विद्यार्थियों का सर्वोत्तम बहुमूल्य आभूषण उसकी रचनात्मक क्षमता होती है। यदि हम बालक की रचनात्मक क्षमता का उचित विकास करें तो अवश्य ही हमारे देश की सभी समस्याएं हल हो सकती हैं, और देश उन्नति के शिखर पर पहुच सकता है। सृजनशीलता का विकास जहाँ तक एक ओर माता–पिता व बच्चों के पारिवारिक संबंधों पर निर्भर करता है, वहीं दूसरी ओर परिवार के सामाजिक, आर्थिक स्थिति पर भी निर्भर होता है। बालक की अनौपचारिक शिक्षा उसके जन्म से ही शुरू होती है, जबकि औपचारिक शिक्षा का मुख्य दायित्व शिक्षक पर होता है। बालक जैसे–जैसे ज्ञान अर्जित करता जाता है उसमें नवीन वस्तुओं के निर्माण एवं चिंतन क्षमता का विकास होता जाता है, जबकि नवीन वस्तुओं के निर्माण व चिंतन क्षमता का संबंध सृजनात्मकता से होता है। बालक की सृजनात्मकता पर उसकी शैक्षिक उपलब्धि का किस प्रकार प्रभाव पड़ता है ? शोधकर्ता को यही जानने की जिज्ञासा हुई।

शिक्षार्थियों में सृजनशीलता की मात्रा कुछ सीमा तक विद्यमान रहती है किन्तु वैयक्तिक भेदों के कारण उनमें सृजनशीलता की मात्रा में अंतर भी पाया जाता है। सृजनशीलता का महत्व प्रकट करते हुए स्किनर ने कहा है कि– हमारे युग में यदि सबसे बड़ी कोई मनोवैज्ञानिक उपलब्धि प्राप्त हुई है जिसने कि शैक्षिक प्रक्रिया को अत्यधिक प्रभावित किया है तो वह इस तथ्य की खोज है कि बालक में सृजनात्मक क्षमता होती है तथा विद्यालय इन शक्तियों के विकास में बालक की सहायता कर सकता है। स्टेन ने भी सृजनशीलता के संबंध में कहा है कि– कार्य का परिणाम नवीन है, जो किसी समय में समूह द्वारा उपयोगी मान्य हो, वह कार्य सृजनशीलता कहलाता है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

सृजनशीलता एक मानवीय योग्यता है उसकी मौलिकता, नवीनता एवं प्रवाह को अभिव्यक्त करती है। आज के प्रतिस्पर्धी दौर में प्रत्येक देश एक दूसरे से आगे जाने की होड़ में सतत प्रयासरत हैं ऐसे में सृजनात्मकता का महत्व बढ़ जाता है क्योंकि सृजनात्मकता ही नवीन ज्ञान, विचार व कौशल प्रदान कर मानव सभ्यता के बेहतर कल का सृजन करेगी। सृजनात्मकता मानव के क्रियाकलापों एवं निष्पत्ति के लिए आवश्यक है। सृजनात्मकता का अर्थ वैज्ञानिक या कलात्मक सृजन से ही मात्र नहीं है यह प्रत्येक बालक तथा बालिका में पृथक–पृथक पायी जाती है। समाज में कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के कार्य या व्यवसाय में सृजनात्मकता के दर्शन होते हैं। सोरेन्सन का मत है– अमूर्त बुद्धि का उच्चतम पक्ष संभवतः कल्पनाशील, मौलिक व सृजनात्मक कार्य में विद्यमान होता है, निम्नतम पक्ष सरल क्रियाओं के मात्र अनुकरण में।

विद्यार्थियों में सृजनात्मक चिंतन स्तर ज्ञानात्मक एवं रचनात्मक मानसिक प्रक्रियाएं होती हैं जो दोनों ही प्रक्रियाओं में गत अनुभवों का महत्वपूर्ण स्थान होता होता है। सृजनात्मकता का संबंध सृजन या रचना करने की योग्यता एवं शक्ति से होता है। यह सृजन विविध प्रकार का हो सकता है, नवीन वस्तुओं या विचारों का सृजन, पुराने वस्तु से नवीन वस्तु का निर्माण, ये सभी सृजन के रूप हैं। आधुनिक समय में शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति लाने में सृजनात्मकता का बहुत बड़ा योगदान है। विविध शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के तौर तरीके में बदलाव, नवीन शिक्षण तकनीकी का प्रयोग, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को मनोरंजक, रुचिकर व ज्ञानवर्धक बनाना सृजनात्मकता का ही परिणाम है। यदि हम अपने जीवन के प्रत्येक पक्ष पर नजर डाले तो यह ज्ञात होता है कि प्रत्येक दिन हम कुछ न कुछ नई वस्तुओं में बदलाव एवं नई परिस्थिति, समस्या, नए विचारों से सामना होता रहता है। सृजनशीलता किसी भी प्रकार की प्रगति का आधार होती है।

भारत जैसे विकासशील देश में पाश्चात्य देशों की तुलना में सृजनशीलता या रचनात्मकता पर कम कार्य हुए हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि इसपर विशेष बल देने की आवश्यकता है। शिक्षा प्रक्रिया औपचारिक हो या अनौपचारिक उसका उद्देश्य विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का विकास करना होना चाहिए। इसके लिए अध्यापकों व अभिभावकों को अपनी भूमिका का निर्वहन पूर्णतया ईमानदारी से करना आवश्यक है। इनके कार्यों में प्रवाह, विविधता, मौलिकता व विस्तारण जैसे तत्व परिलक्षित होतें हैं। भारत में छात्रों में

निहित सृजनशीलता के गुण का विकास न होने से हजारों लाखों प्रतिभाएं अविकसित रह जाती है और उनमें राष्ट्र को हानि होती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सृजनात्मक स्थिति अन्वेषणात्मक होती है। सृजनात्मकता ज्ञान, सूचना तथा कौशल के क्षेत्र में पायी जाती है। नवीन तथ्यों, सिद्धांतों का प्रतिपादन, सूचना ग्रहण करने तथा कराने की नवीन प्रणालियों तथा नवीन वस्तु, विचार की प्रस्तुति सृजनात्मकता के अंतर्गत आती है। रूश नामक विद्वान ने भी कहा है कि सृजनात्मक मौलिकता वास्तव में किसी भी प्रकार की क्रिया में घटित होती है। सृजनात्मकता का महत्व प्रकट करते हुए स्किनर ने भी इस कथं का समर्थन किया है– हमारे युग में यदि सबसे बड़ी कोई मनोवैज्ञानिक उपलब्धि प्राप्त हुई है जिसने कि शैक्षिक प्रक्रिया को प्रभावित किया है तो वह इस तथ्य की खोज है कि प्रत्येक बालक में सृजनात्मक क्षमता होती है तथा विद्यालय इन शक्तियों के विकास में इनकी सहायता कर सकता है। इसलिए सृजनात्मकता का अध्ययन आवश्यक प्रतीत होता है।

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन–

संबंधित साहित्य से तात्पर्य शोध समस्या से संबंधित उन तथ्यों का अनुशीलन है जिसके आधार पर शोधार्थी शोध समस्या, शोध प्रविधि, शोध उद्देश्य एवं परिकल्पना के निर्माण में सहायता प्राप्त करता है। प्रस्तुत शोधकार्य के लिए अध्ययन किये गए शोध साहित्यों में से प्रमुख कार्य जिसमें **यादव, नरसिंह (2000)** ने माध्यमिक स्तर पर माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया और निष्कर्षों में पाया कि शहरी व ग्रामीण विद्यार्थी नमनीयता में सार्थक अंतर रखते हैं। **कुमार, डॉ. अरुण (2018).** ने मेरठ में यू०पी० बोर्ड तथा सी०बी०एस०ई० बोर्ड के छात्रों की रचनात्मक अधिगम एवं अध्ययन की आदतें के बीच संबंधों का अध्ययन पर शोध कार्य किया। निष्कर्ष मे पाया गया कि यूपी बोर्ड की तुलना में सी० बी० एस० ई० बोर्ड के छात्रों में अधिक अध्ययन आदतें पाई गई जबकि यूपी बोर्ड के छात्रों में सी०बी०एस०ई०बोर्ड के छात्रों की तुलना में रचनात्मक अधिगम अधिक देखने को मिला। **माला, मणि (2018).** ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध किया। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह देखा गया कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के सृजनात्मकता की विमा प्रवाह, विविधता, एवं मौलिकता में अंतर है। **सिंह, लव कुश (2019)** ने सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध कार्य किया। निष्कर्ष में पाया गया कि सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों की सृजनात्मकता में काफी अंतर है।

शोध समस्या का चयन–

शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता की आवश्यकता और उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुए निम्नांकित शोध समस्या का चयन किया–

"उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध अध्ययन के उद्देश्य –

1. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना–

1. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन के चर–

प्रस्तावित शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा स्वतंत्र एवं आश्रित चर के रूप में निम्न चरों को लिया गया है–

स्वतंत्र चर – उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्र एवं छात्राएं।

आश्रित चर – सृजनात्मकता।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त प्रविधि एवं उपकरण–

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने वर्णात्मक शोध की सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया है जिसमें विद्यार्थियों के सृजनात्मकता का मापन करने के लिए **डॉ0 बाँकर मेहदी (नई दिल्ली) द्वारा निर्मित 'शाब्दिक सृजनात्मक चिंतन स्तर परिसूची'** परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त जनसंख्या–

प्रस्तुत शोध के लिए शोधार्थी ने शोध जनसंख्या के लिए उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के कक्षा 12 के छात्रों को शोध जनसंख्या के रूप में चयनित किया गया है।

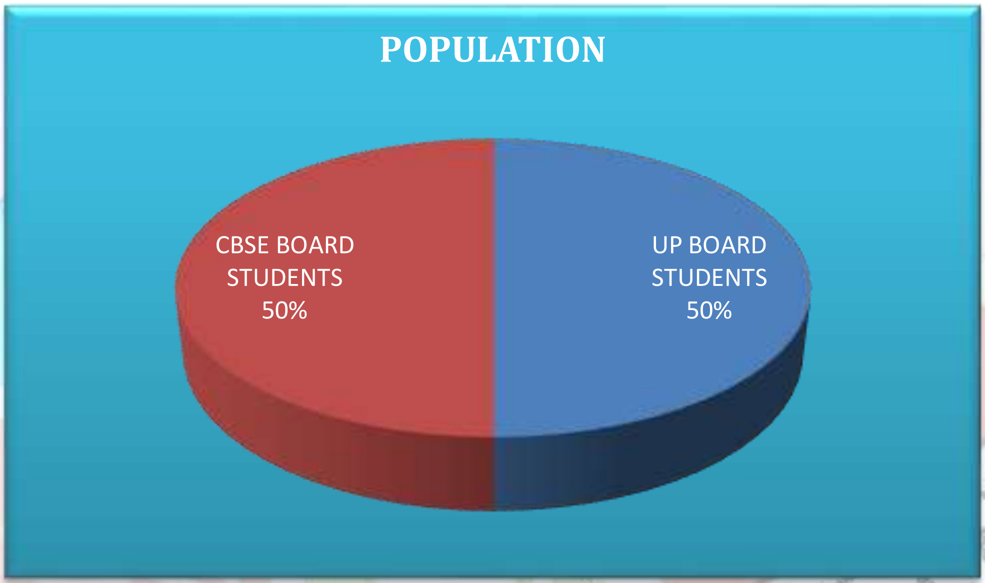

शोध अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श–

शोधार्थी ने प्रस्तुत शोधकार्य के लिए निर्धारित समस्त जनसंख्या से न्यादर्श के रूप में साधारण यादृच्छिक विधि के द्वारा यू0पी0 बोर्ड के 200 छात्र और सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के 200 छात्रों को लिया गया है। इसी प्रकार से यू0पी0 बोर्ड के 200 छात्राओ एवं सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के 200 छात्राओं को चयनित किया गया है।

न्यादर्श तालिका

बोर्ड	छात्र	छात्राएं	योग
यू0पी0 बोर्ड	200	200	400
सी0बी0एस0ई0 बोर्ड	200	200	400
योग	400	400	800

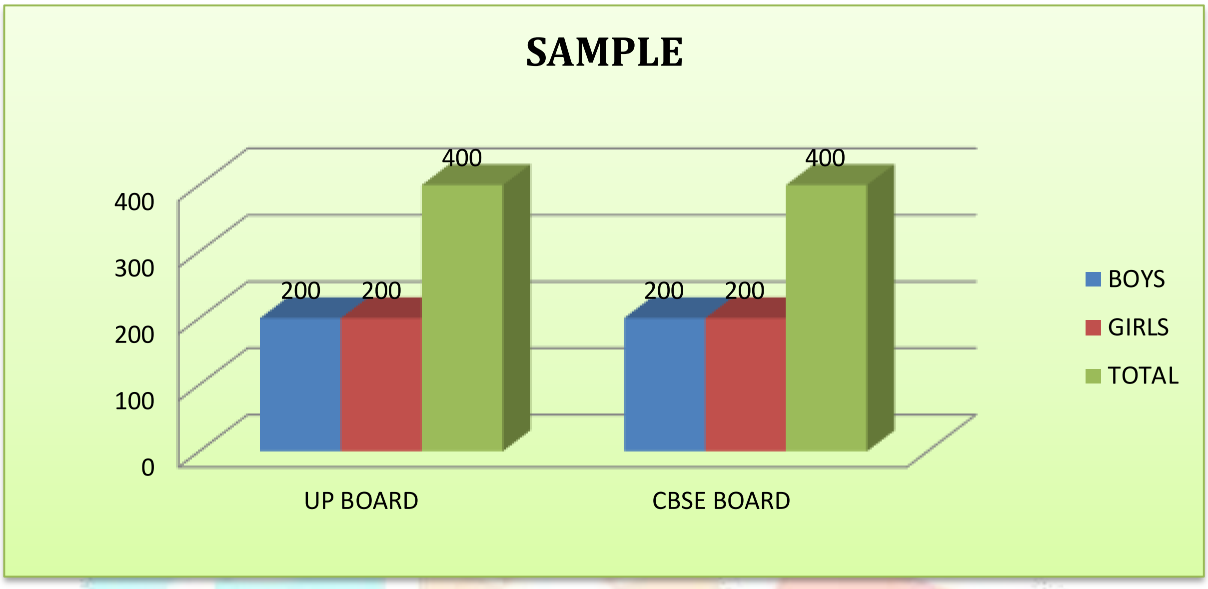

आकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध उपकरणों के प्रयोग से प्राप्त किया गए आकड़ों को निम्न रूपों में विश्लेषित किया गया है–

तालिका संख्या 1

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता को प्रदर्शित करने वाली तालिका का सांख्यकीय विश्लेषण

<table>
<tr><th>क्र0 सं0</th><th>शोध चर</th><th>संख्या</th><th>मध्यमान</th><th>मानक विचलन</th><th>मानक त्रुटि</th><th>माध्य अन्तर</th><th>क्रान्तिक अनुपात</th></tr>
<tr><td>1</td><td>उ0प्र0मा0 शिक्षा बोर्ड के छात्र</td><td>200</td><td>139</td><td>9.85</td><td rowspan="2">0.865</td><td rowspan="2">06</td><td rowspan="2">6.936</td></tr>
<tr><td>2</td><td>सी.बी.एस.सी. बोर्ड के माध्यमिक छात्र</td><td>200</td><td>145</td><td>7.27</td></tr>
<tr><td colspan="8">स्वतंत्राश मान = 398 के सार्थकता स्तर 0.01 तथा 0.05 के मान क्रमषः 2.59 तथा 1.97 पर सार्थक</td></tr>
</table>

विश्लेषण एवं व्याख्या :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में तालिका सं0 1 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के छात्रों की सृजनात्मकता के अध्ययन में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक छात्रों की सृजनात्मकता का मध्यमान 139 तथा मानक विचलन 9.85 प्राप्त हुआ जबकि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक छात्रों की सृजनात्मकता का मध्यमान 145 तथा मानक विचलन 7.27 प्राप्त हुआ। प्राप्त ऑकड़ों का सांख्यकीय विश्लेषण करने पर दोनों वर्गों की मानक त्रुटि 0.865 तथा माध्य अन्तर 06 प्राप्त हुआ। जिसके आधार पर क्रान्तिक अनुपातमान 6.936 प्राप्त हुआ। जो कि पूर्व निर्धारित स्वतंत्रांश मान 398 के सार्थकता स्तर 0.01 के मान 2.59 तथा 0.05 के मान 1. 97 से अधिक प्राप्त हुआ। जिसके आधार पर कल्पित शून्य परिकल्पना दोनों स्तरों पर निरस्त हो जाती है और वैकल्पिक परिकल्पना सत्य हो जाती है तथा स्पष्ट हो जाता है कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक छात्रों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है तथा दोनों वर्गों के माध्यमिक छात्रों की सृजनात्मकता के मध्यमान मानों की तुलना करने पर केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक छात्रों की सृजनात्मकता का मध्यमान, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक छात्रों की सृजनात्मकता से उच्च स्तर का पाया गया।

आरेख सं0 1

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक स्तर के छात्रों की सृजनात्मकता के अध्ययन का रेखाचित्र

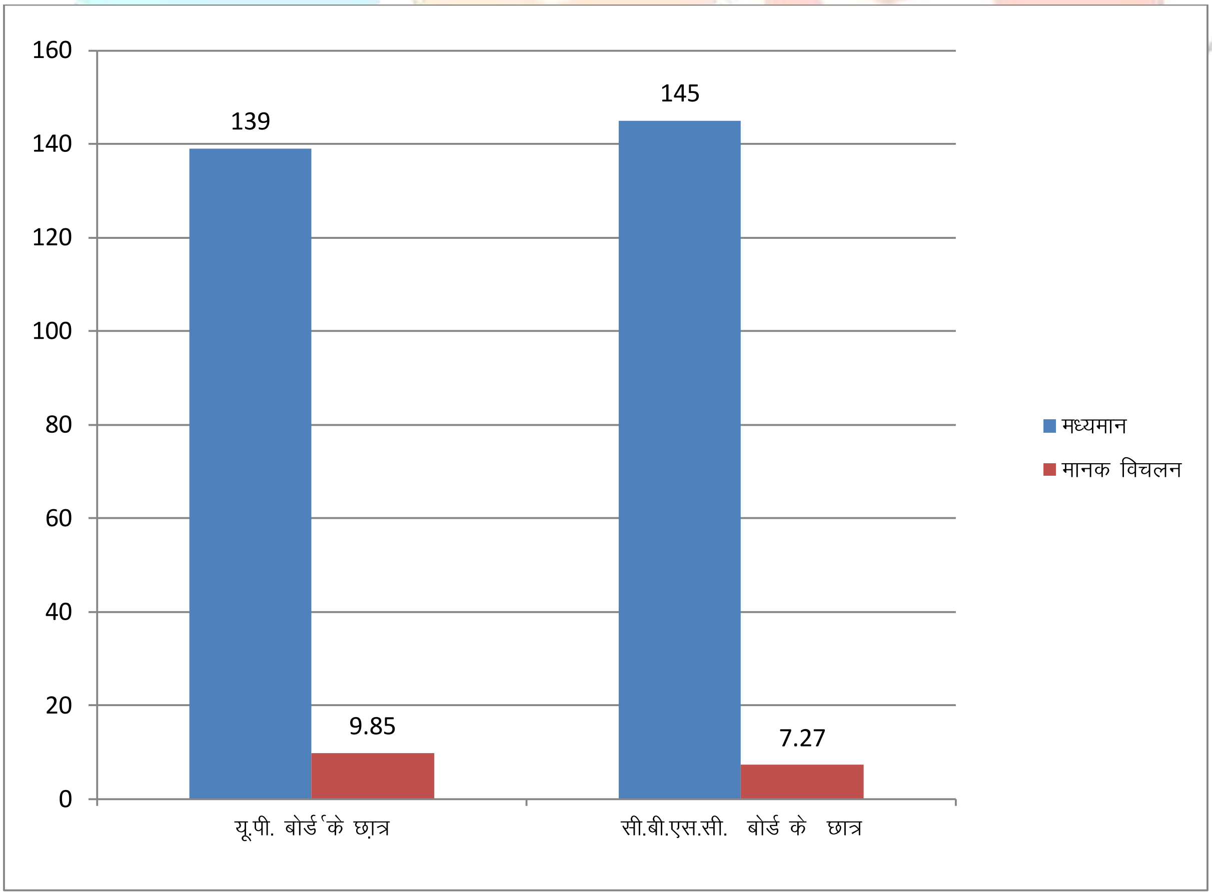

तालिका संख्या 2

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के माध्यमिक स्तर के छात्राओं की सृजनात्मकता आदतों को प्रदर्शित करने वाली तालिका का सांख्यकीय विश्लेषण

क्र0 सं0	शोध चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	माध्य अन्तर	क्रान्तिक अनुपात
1	उ0प्र0मा0 शिक्षा बोर्ड की छात्रा	200	141	7.35	0.690	05	7.246
2	सी.बी.एस.सी. बोर्ड की माध्यमिक छात्रा	200	146	6.44			
स्वतंत्राश मान = 398 के सार्थकता स्तर 0.01 तथा 0.05 के मान क्रमषः 2.59 तथा 1.97 पर सार्थक							

विश्लेषण एवं व्याख्या :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में तालिका सं0 2 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की माध्यमिक छात्राओं की सृजनात्मकता के अध्ययन में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की माध्यमिक छात्राओं की सृजनात्मकता का मध्यमान 141 तथा मानक विचलन 7.35 प्राप्त हुआ जबकि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की माध्यमिक छात्राओं की सृजनात्मकता का मध्यमान 146 तथा मानक विचलन 6.44 प्राप्त हुआ। प्राप्त ऑकड़ों का सांख्यकीय विश्लेषण करने पर दोनों वर्गों की मानक त्रुटि 0.690 तथा माध्य अन्तर 05 प्राप्त हुआ। जिसके आधार पर क्रान्तिक अनुपातमान 7.246 प्राप्त हुआ। जो कि पूर्व निर्धारित स्वतंत्राश मान 398 के सार्थकता स्तर 0.01 के मान 2.59 तथा 0.05 के मान 1. 97 से अधिक प्राप्त हुआ। जिसके आधार पर कल्पित शून्य परिकल्पना दोनों स्तरों पर निरस्त हो जाती है और वैकल्पिक परिकल्पना सत्य हो जाती है तथा स्पष्ट हो जाता है कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की माध्यमिक छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है तथा दोनों वर्गों के सृजनात्मकता के मध्यमान मानों की तुलना करने पर केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की माध्यमिक छात्राओं की सृजनात्मकता का मध्यमान, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की माध्यमिक छात्राओं की सृजनात्मकता से उच्च स्तर का पाया गया।

आरेख सं0 2

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की माध्यमिक स्तर के छात्राओं की सृजनात्मकता के अध्ययन का रेखाचित्र

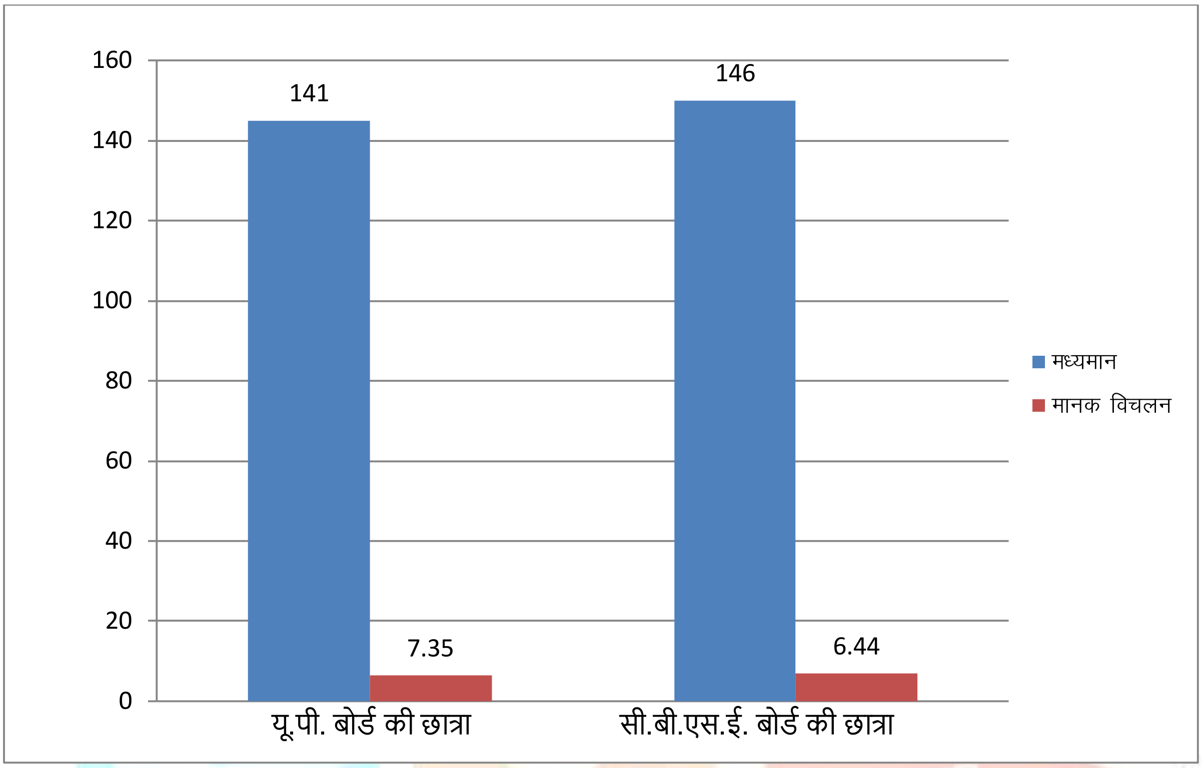

शोध निष्कर्ष –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। जिसमें उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों के सृजनात्मकता की प्रभावशीलता में असमानता पायी गयी साथ ही छात्राओं के सृजनात्मकता की प्रभावशीलता छात्रों की अपेक्षा उच्च स्तर की पायी गयी। अतः स्पष्ट हो जाता है कि के सृजनात्मकता के विकास से अधिगम स्तर में वृद्धि तथा विद्यार्थियों में नवीन ज्ञान के सृजन को विकसित किया जा सकता है।

संदर्भ सूची –

1. शुक्ला, मधू (2004). भारत में शिक्षा का विस्तार, प्रकाशन योजना– सितम्बर माह, पृ0 स0 13–14
2. पाण्डेय, राम सकल (2010). भारत में शिक्षा का विकास, प्रकाशन– श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृ0 स0 17–19
3. सक्सेना, सरोज (2009). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, प्रकाशन– साहित्य प्रकाशन आगरा, पृ0 स0 13–19
4. शर्मा, आचार्य श्रीराम (2015). शिक्षण प्रक्रिया में सर्वांगपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता, प्रकाशन– युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि मथुरा, पृ0 स0 3–9
5. श्रीवास्तव, कान्ति मोहन (2010). प्रगतिशील भारत और शिक्षा, प्रकाशन– साहित्य प्रकाशन आगरा, पृ0 स0 9–13
6. भार्गव, उर्मिला (2016). शिक्षक सिद्धांत एवं शिक्षण कला, प्रकाशन– अमित प्रकाशन आगरा, पृ0 स0 14–17
7. गुप्ता, एस0 पी0 (2022). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धांत एवं व्यवहार, शारदा पुस्तक भवन, पृ0 स0 602–604

8. माला, मणि (2018). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विकलांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन, वॉल्यूम–4, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एण्ड टेक्नॉलजी, पृ0 स0 1954–1959
9. सिंह, अरुण कुमार (2018). शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ0 स0 120–122
10. सिंह, लव कुश (2019). सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन. वॉल्यूम 8, यूजीसी अप्रूव्ड जर्नल, पृ0 स0 1–6